नथिया ने गांववालों की अगुवाई की

जुही

हमेशा की तरह सुबह चार बजे उठकर रज्जो ने पास पड़ोस की औरतों को उठाना शुरू कर दिया। श्यामा, नज़मा, लक्ष्मी और जीतो, सभी अपने-अपने घड़े उठाकर तालाब की तरफ चल पड़ीं। यह उनका रोज का काम था।

सोनपुर गांव में पिछले साल चुनाव के समय पाइप लाइन डली थी। बरमे और नल लगे थे। पर पानी आज तक नहीं आया था। गांव की औरतें सुबह तड़के उठकर तालाब पर जातीं। तालाब में झिरी खोद-खोद अंजुलि में पानी ले लेकर घड़े भरतीं। तब कहीं सूरज उगने तक एक घड़ा पानी भर पाता था।

नथिया की नई-नई शादी हुई। ब्याह कर सोनपुर आई। दूसरे ही दिन सास को सुबह पानी भरने जाते देखा। उसे समझ ही नहीं आया आख़िर माजरा क्या है?

समस्या की गहराई

बात आई गई हो गई। पर रोज़ का यह चलन नथिया से बर्दाश्त नहीं हुआ। आखिर एक दिन हिम्मत कर उसने सास से पूछ ही लिया, "अम्मा, यहां नल तो है, फिर पानी क्यों नहीं आता।"

"पता नहीं बेटी, मैं क्या जानूं। सुना है यहां की ज़मीन नमकीन है, उस पर पानी की कमी है। बारिश भी कम होती है। कहीं-कहीं तो बिल्कुल ही नहीं होती। अधिकारी कहते हैं, पानी बहुत दूर है। यहां लाने में भारी खर्चा होगा।"

नथिया चुपचाप सुनती रही। पर मन में उसके एक तूफान सा उठ रहा था। वह बारहवीं क्लास पढ़ी थी। मायके में गांव की कार्यकर्ता के साथ मिलकर कुछ दिन काम भी कर चुकी थी। उसने निश्चय कर लिया। जो हो सो हो, पर इस समस्या का हल तो करना ही है।

दूसरे दिन मां से मिलने के बहाने नथिया अपने गांव गई। सारी बातें कार्यकर्ता दीदी सलमा को बताईं। शाम तक दोनों मिलकर सोनपुर लौट आईं। रात को ही चौपाल पर औरतों को गाने-बजाने के बहाने से इकट्ठा किया।

संघर्ष की तैयारी

सभी औरतों को पानी की तकलीफ थी, इसलिए सब सलमा और नथिया की बात ध्यान से सुन रही थीं। नथिया ने कहा, "हमें अपनी मदद आप करनी होगी। दो काम करने होंगे। हम

सलमा दीदी की मदद से पानी बोर्ड को अर्जी देंगे। जब तक गांव में पानी नहीं आएगा, रोज दो औरतें बोर्ड के दफ्तर जाएंगी। घर का काम निपटा कर बाकी औरतें चौपाल पर इकट्ठी हो जाएंगी।

"हम गांव में कई जोहड़ बनाएंगे। इससे बारिश के दिनों में थोड़ा बहुत पानी रुकेगा। धीरे-धीरे जमीन के नीचे के पानी का स्तर उठेगा। हमारी कुछ तकलीफ़ कम हो जाएगी।" कुछ हिचकते हुए सबने मदद करने का वादा किया। पर दूसरे दिन नथिया, सलमा और उसकी सास के अलावा कोई नहीं आया।

लंबी लड़ाई

नथिया ने अपनी सास और सलमा दीदी को अर्जी देने के लिए रवाना कर दिया। और खुद अकेली जुट गई। मिट्टी खोदी, तसले में भरकर जोहड़ बनाने वाली जगह डाल देती। शाम तक वह इसी तरह जुटी रही। भूखी, प्यासी। रज्जो से देखा न गया। दूसरे दिन सुबह वह भी कुदाली ले आ गई। इस तरह एक-एक दो-दो करके गांव की सभी औरतें जुट गईं। दो दफ्तर जातीं, बाकी जोहड़ बनातीं।

कुछ ही दिन में जोहड़ तो बन गया। पर सरकारी अफसरों पर कोई असर नहीं हुआ। वे टालते रहे। महीनों गुजर गए, औरतें उकताने लगीं। पर नथिया ने हिम्मत नहीं हारी। समझाया-बुझाया। थोड़ी और हिम्मत करो। पानी जरूर आएगा। हम बोर्ड के दफ्तर के सामने भूख-हड़ताल करेंगे, नारे लगाएंगे।

ऐसा ही किया गया। औरतों ने कनस्तर पीटे। नारे लगाए, रास्ता रोका। किसी कर्मचारी को अंदर से बाहर निकलने नहीं दिया।

अफसर परेशान हो गये। थक कर, पुलिस को फोन किया। पुलिस आई। औरतों ने पुलिस को घेर लिया। मंत्री जी आए। काले झंडे दिखाकर उनका स्वागत किया। नारे लगाए।

मंत्री जी भले आदमी थे। उन्होंने औरतों की बात मान ली। अफसरों को आदेश दिया। गांव में तीन महीने तक पूरी पानी की व्यवस्था हो जानी चाहिए। काम शुरू हो गया। बरसात भी शुरू हो गई थी। बरसात ने थोड़े पानी का जुगाड़ किया। और तीन महीने बीतने से पहले गांव में पानी आ गया।

नथिया ने सारे गांव की अगुवाई की। सबने उसकी खूब तारीफ की। नथिया की गांव में इज्ज़त बढ़ी। नथिया होशियार थी, उसने मौके का पूरा फ़ायदा उठाया। गांव में एक महिला मंडल बनाया। लोगों को समझाया, छोटे बच्चों को पढ़ने भेजो। बेटियों की देखभाल, प्यार दुलार में कमी न रखो। इन्हें बोझ न समझो। जब हम अपने बेटे-बेटी की एक सी परवरिश करेंगे तभी तो खुशहाली आएगी।

पानी के बाद राशन की लड़ाई

उसकी लड़ाई सिर्फ पानी पर ही खत्म नहीं हुई। अब उसने गांव में लाला की दुकान के आगे नारे-बाजी करनी शुरू की है। कारण—लाला मिट्टी के तेल में पानी मिलाता है, हल्दी में पीला रंग। गेहूं, चावल तो कभी भी उसकी दुकान में मिलता ही नहीं है। सब लोग परेशान रहते हैं। इस बार लड़ाई में उसके साथ मर्द भी शामिल हैं। वे सब जान गये हैं कि हाथ पर हाथ धरे रहने से कुछ नहीं होगा।

पूरा राशन मिले, तेल मिले, सही दाम पर मिले

यह तो औरतों की मांग है ही। साथ ही औरतों के नाम पर राशन कार्ड बनाने की मांग भी रखी है। राशन की दुकान का कब्ज़ा महिला मंडल के हाथ में दिया जाना चाहिए जिससे कोई धांधली न हो पाए।

अधिकारीगण इस बात को मानने को राज़ी नहीं हैं। इसलिए नथिया का कहना है, हम हार नहीं मानेंगे। अपना हक़ लेकर ही दम लेंगे। इसके लिए चाहे हमें अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े।

नथिया के हौसले बुलंद है। वह अकेली भी नहीं है। सारा गांव उसके साथ है। और इसी के सहारे वह आगे बढ़ती जा रही है। □